Krishna Nand M.A III Sem's (1)

Q:— असामान्य व्यवहार के जैविक मॉडल की आलोचनात्मक समीक्षा करें।

Examine critically biological model of abnormal behaviour.

Ans:— असामान्य व्यवहार की व्याख्या के लिए मनोविज्ञानियों द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों या मॉडलों का प्रतिपादन किया गया। इन्हीं में से एक प्रमुख व्याख्यात्मक मॉडलों जैविक मॉडल है। जैविक मॉडल के अनुसार असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति में जैविक कारकों यथा- जननिक कारक, शरीर रचना, रसायनिक उपद्रव आदि का योग होता है, असामान्य व्यवहारों की विकासात्मक प्रक्रिया में इनकी अहम भूमिका होती है। इस मॉडल के अनुसार जिस प्रकार सामान्य जैविक विकास के कारण व्यक्ति में सामान्य व्यवहारों का विकास होता है, ठीक उसी प्रकार जैविक विकास के असामान्य होने के कारण व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के असामान्य व्यवहार विकसित होने लगते हैं। निम्नांकित जैविक कारकों की मुख्य भूमिका पाई गई है—

(1) आनुवंशिकता (Heredity):— जैव मॉडल व्याख्याकारों द्वारा असामान्यता का एक मुख्य कारक आनुवांशिकता को माना गया है। इस संदर्भ में किए गए अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि आनुवांशिकता असामान्य व्यवहारों के विकास की एक परिस्थिति बना देती है और अर्थात असामान्य व्यवहारों वाले परिवार के बच्चों में भी इस प्रकार के व्यवहार विकसित होने की संभावना बहुत अधिक पाई जाती है। साथ-ही-साथ व्यक्ति के व्यवहार पर आनुवंशिक कोड का सीधा प्रभाव पड़ता है। फलत: इसमें किसी प्रकार के दोष से यह स्वाभाविक है कि व्यक्ति के व्यवहार में असामान्यता उत्पन्न हो जाता है। इस संदर्भ में किए गए आधुनिक अध्ययनों से यह पता चला है कि अगर एक जुड़वा बच्चे में

2 जैविक मॉडल

असामान्य व्यवहार विकसित हो जाता है, तो इस में भी इसके विकसित होने की प्रबल संभावना रहती है। एक अन्य अध्ययन में पाया गया है कि असामान्य व्यवहारों से पीड़ित माता-पिता के बच्चों को सामान्य माता-पिता के साथ पालन-पोषण करने पर भी उनमें असामान्यता के लक्षण विकसित हो जाते हैं।

गुडविन एवं सहयोगियों (Goodwin et al, 1973) के अनुसार मनोविदलता से पीड़ित माताओं के बच्चों को उस परिवार से बाहर सामान्य माताओं के साथ पालन-पोषण करने के बाद भी उनमें आगे चलकर मनोविदलता के लक्षण विकसित हो गए। इन अध्ययनों के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि असामान्य व्यवहारों के विकास में अनुवांशिकता एक प्रमुख कारण है।

मनोवैज्ञानिकों के एक वर्ग द्वारा इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा गया है कि सभी प्रकार के असामान्य व्यवहारों की व्याख्या मात्र अनुवांशिकता के आधार पर संभव नहीं है। इस सिद्धान्त की आलोचना करने वाले मनोविज्ञानियों का मत है कि उपर्युक्त अध्ययनों में प्रारंभिक वातावरण के महत्त्व की उपेक्षा की गई है। इनमें किसकर (Kisker, 1985) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका स्पष्ट मानना है कि इस सिद्धान्त के आधार पर सभी प्रकार के असामान्य व्यवहारों की व्याख्या संभव नहीं है।

(3) शारीरिक रचना मॉडल (Physical Constitutional Model) :—

शारीरिक रचना मॉडल के आधार पर असामान्य व्यवहारों की व्याख्या करने वाले मनोविज्ञानियों में शेल्डन (Sheldon, 1954) का स्थान पहला है। इनके द्वारा शरीर गठन को तीन भागों में बांटा गया है — एण्डोमॉर्फी, मेसोमॉर्फी तथा एक्टोमॉर्फी। इनका मत है कि

Krishna Nand M.A III Sem (3)

3 जैविक मॉडल

तनावपूर्ण परिस्थिति के उत्पन्न होने पर इन तीन तरह के शारीरिक संरचना वाले व्यक्ति में अलग-अलग ढंग की अपसमायोजित व्यवहार (maladaptive behaviour) उत्पन्न होते पाये जाते हैं। यथा - एण्डोमार्फ जो नाटे-मोटे एवं आराम पसंद व्यक्तित्व वाले होते हैं, में मूड (mood) में उतार-चढ़ाव का यानि मनोदशा विकृतियाँ अधिक होने की संभावना रहती है। मेसोमार्फ जो लम्बे मजबूत हड्डियों एवं गठीले मांस-पेशियों वाले होते हैं, इनमें आक्रमता, अपराध तथा समाज-विरोधी व्यवहार करने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। इसी प्रकार एक्टोमार्फ, जो लम्बे, दुबले-पतले कमजोर शारीरिक संरचना वाले होते हैं, में मनोविदलता (Schizophrenia), चिन्ता मनस्नायुविकृति आदि विकसित होने की संभावना तीव्र होती है।

नेपोलियन, काशिन एवं यंग (Nepolian, chassin & young, 1980) ने अपने अध्ययन में पाया कि शारीरिक आकर्षण भी एक प्रमुख शरीर गठनात्मक कारक है जो असामान्य व्यवहार उत्पन्न करने में सहायक होता है। इनके अनुसार जिसमें शारीरिक सुन्दरता कम होती है, उनमें मानसिक रोग तेजी से पनपता है और इनमें समायोजन से संबंधित समस्याएँ अत्यधिक उत्पन्न होती है। नोल्स, कैश एवं विनस्टीड (Noles, Cash & winstead, 1985) द्वारा उपरोक्त मत का समर्थन करते हुए बतलाया गया है कि किसी व्यक्ति में यदि शारीरिक कुरूपता की गलत धारणा को उसके मन में बैठा दिया जाय तो इससे उसमें असामान्य व्यवहार उत्पन्न हो जाता है।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक बनावट भी असामान्यता का एक कारक है परन्तु इसे एक मात्र कारक नहीं माना